विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

शहरी हरियाली में मृत्यु दर घटाने का रहस्य छुपा है

यजुर्विद संहिता का एक सूत्र है: हरित्समुच्चय: शुभहेतुरेष:, स्वस्थं शरीरं मनसश्च शान्तिम्। विनाशयत्याशु गदांस्तथान्या:, सृजत्ययुं दीर्घमथो समृद्धिम्।। तात्पर्य यह है कि हरियाली का विस्तार शुभ का कारण है। यह शरीर को स्वस्थ बनाती है और मन को शांति प्रदान करती है। यह शीघ्र ही रोगों और अन्य कष्टों को नष्ट करती है और दीर्घायु तथा समृद्धि को उत्पन्न करती है। आज की चर्चा इसके वैज्ञानिक विश्लेषण पर है।

कभी आपने सोचा है कि हमारे आसपास के हरे-भरे पेड़, पार्क और हरियाली हमें कैसे जिंदा रख सकते हैं? यह कहानी एक ऐसे सफर की है जहां विज्ञान और प्रकृति के बीच की अनदेखी डोर ने मानव जीवन को न केवल लंबा किया है, बल्कि इसे शांत और स्वस्थ भी बनाया है।कल्पना कीजिए, एक ऐसा दिन जब शहरों में हरियाली का नामो-निशान मिट चुका हो। हर तरफ केवल कंक्रीट का जंगल, धूल-धुआं और बेचैनी। यही तो आधुनिक शहरीकरण की सच्चाई है, जहां हरियाली कम होती जा रही है। लेकिन विज्ञान ने हमें बताया है कि यह कहानी किसी त्रासदी की ओर बढ़ सकती है। शोध बताते हैं कि जो लोग हरियाली के पास रहते हैं, उनकी मृत्यु दर कम होती है। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के बीच की कहानी है।

एक बूढ़ी महिला की कहानी लीजिए, जो शहरी कोलाहल में अपने घर की खिड़की से केवल कंक्रीट की इमारतें देखती है। वह अकेली रहती है, उसका स्वास्थ्य खराब है, और वह अक्सर अस्पताल जाती है। लेकिन एक दिन, उसकी बेटी उसे एक ऐसे घर में ले जाती है, जहां खिड़की के बाहर एक बड़ा बगीचा है। कुछ महीनों में, उसकी मानसिक स्थिति में सुधार होता है, उसकी हृदय गति सामान्य हो जाती है और वह पहले से बेहतर महसूस करने लगती है। यह कहानी केवल भावनात्मक नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक है। अध्ययन बताते हैं कि हरियाली हृदय संबंधी बीमारियों, मानसिक तनाव और श्वसन तंत्र पर अद्भुत प्रभाव डालती है।

हरियाली का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह सामुदायिक स्तर पर भी लाभकारी है। ज़रा सोचिए, एक ऐसा इलाका जहां हरियाली की कमी हो, वहां अपराध दर अधिक होती है। लेकिन जैसे ही एक पार्क का निर्माण होता है, बच्चों के लिए खेलने की जगह मिलती है, वयस्कों के लिए टहलने के रास्ते बनते हैं, क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आने लगते हैं। यह केवल एक सामाजिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य और कल्याण का विस्तार है।

क्या हरियाली के बिना भी जीवन संभव है? वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो नहीं। चीन में एक अनोखा अध्ययन बताता है कि अत्यधिक ठंड या गर्मी से होने वाली मौतों को हरियाली नाटकीय रूप से कम कर सकती है। यह शोध स्पष्ट करता है कि हरियाली केवल सौंदर्य का स्त्रोत नहीं है, बल्कि यह जीवन रक्षक भी है। हरियाली केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति और दीर्घायु का आधार भी बन सकती है।

दक्षिण एशियाई देशों में हरियाली के महत्व को समझना और भी आवश्यक हो जाता है। शहरीकरण के कारण हरियाली के क्षेत्र सीमित हो गए हैं, जिससे शारीरिक गतिविधियों में कमी और संबंधित बीमारियों, जैसे मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप, में वृद्धि हुई है। हरियाली को उपयोगी बनाने के लिए डिज़ाइन में सुधार आवश्यक है। उदाहरण के लिए, महिलाओं और बच्चों के लिए सुरक्षित और सुलभ पार्क बनाना, जहां वे बिना किसी डर के टहल सकें।

कम आय वाले और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए हरियाली का सकारात्मक प्रभाव अधिक होता है। गरीब और वंचित समुदाय, जिनके पास स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य संसाधनों तक सीमित पहुंच होती है, हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। यह न केवल स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने में मदद करता है, बल्कि सामाजिक समानता को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी साधन है।

क्या आप जानते हैं कि ब्लू स्पेस (जैसे तालाब, झील) का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव हो सकता है? ब्लू और ग्रीन स्पेस का सम्मिलित प्रभाव श्वसन और कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर को कम कर सकता है। शोध स्पष्ट करता है कि पानी और हरियाली के बीच का यह जुड़ाव हमारी सेहत के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

अब जरा एक छोटे लड़के की कल्पना करें, जो बड़े शहर में हरियाली के बिना पला-बढ़ा है। उसकी श्वसन समस्याएं बढ़ जाती हैं, और वह अक्सर अस्पताल जाता है। लेकिन जब वह एक गांव में अपने दादा-दादी के पास जाता है, जहां हर तरफ पेड़ और खेत हैं, तो उसका स्वास्थ्य बेहतर हो जाता है। यह सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि हकीकत है। अध्ययनों ने दिखाया है कि हरियाली केवल बीमारी को रोकने का साधन नहीं है, बल्कि यह पुनर्वास और उपचार का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकती है।

नीचे प्रस्तुत शोध के आंकड़े और उनके निष्कर्षों में हरियाली और स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर व्यापक और समग्र विवरण देखा जा सकता है।

अल्फ़ानो और साथियों (Environmental Research: 216, 2023) ने 538 नमूनों पर अध्ययन किया। उन्होंने गर्भावस्था के दौरान माताओं के हरियाली के संपर्क का नवजात शिशुओं के डीएनए मिथाइलेशन पर प्रभाव देखा। 147 डिफरेंशियली मिथाइलेटेड क्षेत्र की पहचान की गई, जिनमें से 85 क्षेत्रों ने प्रदूषण, सड़क की दूरी, शहरीकरण और पड़ोस की आय जैसे कारकों के बावजूद भी महत्वपूर्ण परिणाम दिखाए। यह अध्ययन हरियाली और आनुवंशिक प्रभावों के बीच संबंध को रेखांकित करता है।

कामी-बर्नाल और साथियों (Health and Place: 82, 2023) ने हरियाली और टाइप-2 मधुमेह के बीच संबंध पर 13 कोहोर्ट अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 1,700 से 19,22,545 प्रतिभागी शामिल थे। उन्होंने पाया कि जिन व्यक्तियों को अधिक हरियाली का संपर्क मिला, उनमें टाइप-2 मधुमेह की घटनाएं कम थीं।

डिमाकोपुलू और साथियों (Frontiers in Epidemiology, 3, 2023) ने यूरोप के नौ देशों में 204 मिलियन व्यक्ति-वर्ष और 3.1 मिलियन मौतों के आंकड़ों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि पी.एम.2.5, नाइट्रोजन के ऑक्साइड और ब्लैक कार्बन के संपर्क से मृत्यु दर बढ़ती है, लेकिन हरियाली का उच्च स्तर इन नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकता है।

इन शोधों ने हरियाली के व्यापक लाभों को दर्शाया है, जिसमें मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक असमानताओं को कम करने की क्षमता शामिल है। यह स्पष्ट है कि हरियाली मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

लियू और साथियों (Environmental Pollution, 301, 2022) ने 53 अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें 18 देशों के 100 मिलियन व्यक्ति शामिल थे। उनका मेटा-विश्लेषण दिखाता है कि एनडीवीआई (हरियाली का माप)में 0.1 की वृद्धि से कार्डियोवैस्कुलर मृत्यु दर में 2-3 प्रतिशत की कमी होती है।

अधिकारी और साथियों (The Lancet Planetary Health, 4, e135-e136, 2020) ने दक्षिण एशिया के संदर्भ में हरियाली और स्वास्थ्य का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि शहरीकरण के कारण हरियाली की कमी मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों को बढ़ाती है। उन्होंने सुझाव दिया कि हरियाली के डिज़ाइन और उसकी उपलब्धता में सुधार के लिए नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है।

बर्ट्रैंड और साथियों (Public Health, 200:91-98, 2021) ने 13 एक्सपोजर-रिस्पॉन्स फंक्शनका उपयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि एनडीवीआई में 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर के जोखिम अनुपात को 0.96 तक कम कर सकती है।

कुआ और ली (Perspectives in Public Health, 141: 342-353, 2021) ने 20 अध्ययनों (133,363 प्रतिभागी और 202 मिलियन व्यक्ति) का विश्लेषण किया और पाया कि हरियाली का अधिक संपर्क सामान्य मृत्यु दर को 3 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

झोउ और साथियों (Sustainable Cities and Society, 116, 2024) ने 21 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि ब्लू और ग्रीन स्पेस का संयुक्त प्रभाव श्वसन और हृदय संबंधी मृत्यु दर को कम करता है।

ही और साथियों (Science of the Total Environment, 851, 2022) स्ट्रोक से संबंधित मौतों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि हरियाली ने ठंड और गर्मी से संबंधित स्ट्रोक मृत्यु दर को कम किया। उच्च एनडीवीआई ने विशेष रूप से गर्मी के प्रभाव को कम करने में सहायता की।

रिगोलोन और साथियों (International Journal of Environmental Research and Public Health, 18: 1-29, 2021) ने 90 अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि गरीब और वंचित समुदाय हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। हरियाली इन समुदायों में स्वास्थ्य असमानताओं को कम करती है।

रॉजस-रुएडा और साथियों (The Lancet Planetary Health, 3:e469-e477, 2019) ने 8.3 मिलियन प्रतिभागियों पर नौ अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि एनडीवीआई में 0.1 की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर को 4 प्रतिशत तक कम कर सकती है।

स्मिथ और साथियों (Cities, 119, 2021) ने ब्लू स्पेस के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए पाया कि ब्लू स्पेस का संपर्क मोटापे और सामान्य मृत्यु दर में सुधार करता है।

युआन और साथियों (Aging Clinical and Experimental Research, 33:1783-1797, 2021) ने बुजुर्ग व्यक्तियों पर हरियाली के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि हरियाली का संपर्क सामान्य और स्ट्रोक मृत्यु दर को कम करता है।

इसी प्रकार जरे सखाविदि इत्यादि (Science of the Total Environment, 838, 156180, 2022) द्वारा हरियाली और कैंसर के संबंध पर 18 अध्ययनों का मेटा-विश्लेषण बताता है कि फेफड़ों और अन्य प्रकार के कैंसर पर हरियाली के सकारात्मक प्रभाव के संकेत मिले।

इन शोधों ने हरियाली के व्यापक लाभों को दर्शाया है, जिसमें मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक असमानताओं को कम करने की क्षमता शामिल है। यह स्पष्ट है कि हरियाली मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

लेकिन हम इस ज्ञान का उपयोग कैसे कर सकते हैं? व्यक्तिगत स्तर पर, हम अपने आस-पास अधिक से अधिक पौधे लगा सकते हैं। पड़ोस के पार्क में नियमित रूप से समय बिताना हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। जैसा कि यजुर्विद संहिता में कहा गया है: वनं प्रविश्य प्रचलन्ति ये ते, धृतिं लभन्ते हृदये सदा वै। तनु: सुदृढ्या मनस: प्रसादं, विधाय सेव्यं शमयेत् व्यथाश्च।। तात्पर्य यह है कि वन में प्रवेश करके जो लोग पैदल भ्रमण करते हैं, वे सदा अपने हृदय में स्थिरता (धैर्य और शक्ति) प्राप्त करते हैं। उनका शरीर सुदृढ़ होता है और मन प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार,वन को सेवन करते हुए (वन में नियमित भ्रमण करते हुए), शारीरिक और मानसिक दुखों और कष्टों को शांत किया जा सकता है।

बच्चों को प्रकृति के संपर्क में लाना,उन्हें पेड़ों और हरियाली के महत्व के बारे में सिखाना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रशासन के लिए यह जरूरी है कि हरियाली को शहरी योजना का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। पार्क का निर्माण, सार्वजनिक स्थानों पर हरियाली बढ़ाना और ब्लू-ग्रीन स्पेस का प्रबंधन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। इसके साथ ही, सामाजिक असमानता को ध्यान में रखते हुए ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए, जो गरीब और वंचित समुदायों के लिए अधिक सुलभ हों।

हरियाली का महत्व केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारे समाज,और हमारे अस्तित्व का आधार है। यह हमें न केवल जिंदा रखती है, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। यह समय है कि हम इस ज्ञान को अपनाएं और अपने जीवन में हरियाली को स्थान दें। आखिरकार, यह केवल पेड़ों और पौधों की बात नहीं है; यह हमारे जीवन की बात है। आइए, इसे संजोएं और संरक्षित करें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

रोटी, कपड़ा और मकान में मकान ही लोकतंत्र की पहली शर्त

सुचित्रा आर्य

धरती पर कौन, कहाँ और किस परिवार में जन्म लेगा, यह मनुष्य के अधिकार क्षेत्र से परे है। जन्म का विधान स्वयं विधाता की योजना है। किंतु सृष्टिकर्ता ने जब मनुष्य को इस धरती पर भेजा, तो उसे प्रकृति के माध्यम से समानता का अमूल्य अधिकार भी प्रदान किया। प्रत्येक शिशु जब जीवन में प्रवेश करता है, तो उसके पोषण, सुरक्षा और अस्तित्व के अधिकार किसी से कम नहीं होते। किन्तु धरती पर आगमन के बाद यही समानता संसाधनों की होड़ और सामाजिक व्यवस्थाओं की विसंगतियों में बदल जाती है। यहीं से भेदभाव और असमानता का आरंभ होता है- सामाजिक, धार्मिक, लैंगिक और आर्थिक स्तर पर। परिणामस्वरूप, जहाँ एक वर्ग संसाधनों पर विशेष अधिकार जमा लेता है, वहीं गरीब और भूमिहीन परिवार जीवन के सबसे बुनियादी अधिकार-आवास भूमि-से वंचित रह जाते हैं। रोटी और कपड़ा श्रम व साधनों से जुट सकते हैं, किंतु आवासीय भूमि का अधिकार केवल राज्य की नीति और न्यायपूर्ण व्यवस्था से ही सुनिश्चित होता है। यह कैसा विडम्बनापूर्ण यथार्थ है कि जिस देश में पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने, विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति होने और 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकालने के दावे किए जाते हैं, उसी देश में 80 करोड़ लोग आज भी मुफ्त राशन की कतारों में खड़े होने को विवश हैं। विडम्बना यह भी है कि एक विशाल जनसमुदाय अब तक आवासीय अधिकारों से वंचित है।

असंख्य घूमन्तु और बदहाल परिवार आज भी दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनके पास न स्थायी आवास है, न स्थायी पता। यही कारण है कि 'स्थायी पते' की शर्त के नाम पर उन्हें लोकतंत्र में मताधिकार से वंचित कर दिया जाता है। जब उनका कोई स्थायी पता नहीं, तो वे न तो सरकारी योजनाओं का लाभ ले पाते हैं और न ही मताधिकार का सही प्रयोग कर पाते हैं। कभी रोटी, कपड़ा और मकान को समान रूप से मूलभूत अधिकार कहा गया था। परंतु आज का यथार्थ यह बताता है कि मकान सबसे पहला आधार होना चाहिए, क्योंकि जब तक आवास नहीं होगा, तब तक न रोटी और कपड़े की स्थिरता होगी और न ही लोकतंत्र में भागीदारी का वास्तविक अधिकार सुनिश्चित हो सकेगा। भूमि-अधिकार असमानता का प्रत्यक्ष परिणाम अतिक्रमण के रूप में सामने आता है। यदि आज भौतिक सत्यापन किया जाए, तो यह स्पष्ट होगा कि लगभग 20 प्रतिशत भूमि पर स्वयं सरकारी संस्थानों का अवैध कब्ज़ा है। ऐसे में केवल आम जनता को दोषी ठहराना न्यायोचित नहीं कहा जा सकता। प्रशासन और नीतिगत उदासीनता इस समस्या की मूल वजह है। राज्यभर की ग्राम पंचायतों में अनेक राजकीय संस्थान-अस्पताल, विद्यालय, सहकारी समितियाँ, नंदीशालाएँ-गोचर, जोड़ और पायतन भूमि पर अनधिकृत रूप से स्थापित पाए जाते हैं। यह तब और भी गंभीर प्रतीत होती है जब सरकार के पास आधुनिक लैंड रिकॉर्ड सिस्टम और पर्याप्त मानव संसाधन होने के बावजूद लापरवाही देखी जाती है।

परंतु विडम्बना देखिए, यही एक रुपया गरीब के लिए बसने का अधिकार नहीं खरीद सकता। भूमिहीन व्यक्ति यदि विवश होकर राजकीय भूमि पर झोपड़ी खड़ी कर ले, तो न जाने कब न्यायालय के आदेश पर बुलडोज़र उसकी पूरी दुनिया उजाड़ दे। विशेष रूप से, ओबीसी, एससी और एसटी वर्ग इस संकट का सबसे अधिक शिकार हैं। अ्आवसीय समानता का अधिकार केवल कानूनी प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और संवैधानिक दायित्व का विषय है। जब तक ओबीसी, एससी और एसटी वर्ग की पीड़ा का समाधान नहीं होगा, तब तक समानता का स्वप्न अधूरा रहेगा। अतिक्रमण के समाधान के लिए आवश्यक है कि इसे आवासीय, व्यवसायिक, सरकारी और मार्ग-अवरुद्ध श्रेणियों में विभाजित किया जाए। जिन परिवारों आवसीय भूमि के आभाव में मजबूरी में आश्रय के लिए झोंपड़ी बनाई है, उन्हें अन्य अतिक्रमण से अलग मानते हुए संरक्षण दिया जाना चाहिए। वहीं व्यवसायिक और सरकारी अतिक्रमण पर कठोर कार्रवाई हो; राजनीतिक संरक्षण प्राप्त कब्ज़ों पर आर्थिक दंड लगे और अवैध निर्माण करने वाले सरकारी संस्थानों को जवाबदेह ठहराया जाए। साथ ही मार्ग और लोक-उपयोगिता की भूमि को प्राथमिकता से मुक्त कराया जाए, ताकि आमजन के आवागमन और सार्वजनिक हित में किसी प्रकार की बाधा न हो।

–सुचित्रा आर्य,
पूर्व विधायक एवं सदस्य
ओबीसी काउंसिल प्रदेश कांग्रेस
राजस्थान

एक रंग से सबको नहीं लुभा सकते आप....

कुमार अजय

जयपुर में, आसमान में बादलों की आवाजाही है और महीने के मुताबिक ही, बहुत सुहावनी हवा चल रही है। हालांकि चूरू और दूसरी जगहों पर बहुत गर्मी भी है और एयरकंडीशनर चल रहे हैं लेकिन यहां मौसम बहुत खुशनुमा है। छत पर खुले में सोने का अवसर अरसे बाद मिला है और इसका आनंद जानने वाले ही जानते हैं। खुले में सोना शारीरिक स्वास्थ्य के लिए तो अच्छा है ही बल्कि मूड भी बहुत ठीक रहता है। हालांकि रात को अचानक किसी पक्षी का चौंकना, कुत्ते का भौंकना या बिल्ली की कूदफांद डिस्टर्ब करती है फिर भी यह ठीक है। शहर में यह जरूर है कि रात को किसी भी वक्त उठो, आस-पड़ोस का एकाध घर तो जागते हुए ही नजर आता है क्योंकि सबकी अपनी-अपनी टाइमिंग है। कोई देर तक जागते रहता है और कोई सुबह बहुत जल्दी उठ जाता है। यहां डिस्टर्बेंस बहुत सारे हैं जबकि गांव में आठ-नौ बजे बाद वातावरण काफी शांत हो जाता है या यूं कहें कि शांत हो जाता था। अब तो क्या गांव और क्या शहर। गांवों में भी अब कितना-सा गांव रहा है। गांव में भी अब छत पर या बाखळ में खाट डालकर सोने वालों की तादाद अब काफी कम हो गई है। गर्मियों में बिजली कटौती पर रातभर आने वाले फोन बताते हैं कि अब छत की खुली हवा की जगह एयरकंडीशनर ने ले ली है।

सोशल मीडिया पर आपकी सामान्य पोस्ट पर आमतौर पर वही चिर-परिचित लोग आते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि केवल वही लोग आपकी पोस्ट देख रहे हैं। और बहुत सारे लोग आपको देख रहे होते हैं लेकिन वे अक्सर लाइक या कमेंट नहीं करते और नजर नहीं आते। ऐसे में कभी-कभी जब आप विषयांतर करेंगे तो पाएंगे कि कुछ दूसरे लोग भी 'आए' हैं। ये लोग आपको देखते तो रहते हैं लेकिन आमतौर पर खामोश रहते हैं।

यह कमाल ही है कि इस्तेमाल और शोषण करने वाले भी चाहते हैं कि आप थोड़े चतुर बनें और ऐसे न रहें कि हर कोई आपका इस्तेमाल या शोषण कर सके। इस्तेमाल में भी उन्हें एकाधिकार चाहिए। केवल वे ही चूसते रहें। और कोई यह न कर सके। उन्हें कौन बताए कि कम और ज्यादा तो हो सकता है लेकिन यह कैसे संभव है कि केवल आपके लिए किसी के द्वार खुले रहें और दूसरे हर किसी को दूर से ही इनकार हो जाए। हालांकि यह भी होता ही है। कोई-कोई ऐसा होता है जिसे जानते-समझते हुए भी आप ना नहीं कर सकते। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि यह गणों की बात है। किसी-किसी के गण ऐसे भारी होते हैं कि आप उन्हें कभी मना नहीं कर पाते। मना नहीं कर पाना भी जीवन का एक कोढ़ है। एक स्वीकृति या मौन-सम्मति कभी-कभी 'लम्हों ने खता की, सदिया ने सजा पाई' साबित हो जाती है। फिर भी आमतौर पर तो यही है कि आपका स्वभाव कमोबेश एक जैसा ही रहेगा, चाहे सामने कोई भी हो। निभाव जिसकी प्रकृति में है, वह सभी से निभाएगा। आप जिस रिश्ते में हैं, आपसे निभाएगा। दूसरे जिस रिश्ते में हैं, उनसे भी निभाएगा।

महिला और पुरुष केवल भाई-बहिन या पति-पत्नी ही हों, जरूरी नहीं। कोई तीसरा भी रिश्ता होता है, जो बहुत प्यारा होता है। बचपन के अबोध दिनों में आपके साथ खेले, पढ़े, संगति में रहे लोग इसमें हो सकते हैं, आपके ऑफिस के सहयोगी हो सकते हैं, आपकी गांव-गली-गुवाड़ के साथ हो सकते हैं। और निजता चाहने का मतलब यह नहीं कि रिश्ता अवैध ही हो या आपके चरित्र को संकट में खड़े करता ही हो। अच्छे संबंधों में भी निजता चाही ही जा सकती है। ईर्ष्या मनुष्य का सहज स्वभाव है और यह चूंकि हर कहीं है ही, इसलिए इसे स्वीकार भी किया ही जा सकता है। हम अक्सर उन लोगों से जलते रहते हैं जिनके पास हमसे बहुत कम होता है। हम ईर्ष्या के नहीं, दया के पात्र हैं। अंजलि का विवाह बनारस के राजू से हुआ। राजू की आर्थिक हालत खराब होने पर उसे छोड़कर यहां आ गई और अल्केश के साथ अजमेर में रहने लगी। मंगलवार रात वह आनासागर में 10.30 बजे से से 1.30 बजे तक तीन साल की बेटी काव्या को लिए घूमती रही। बेटी को गहरी नींद में सुलाया। वह वह सो गई तो बिना रेलिंग वाली जगह से उसे पानी में फेंककर हमेशा के लिए सुला दिया। विवाह, प्रेम और लिव इन से जुड़े ऐसे अजीबोगरीब किस्से रोज सामने आ रहे हैं। एक से बढ़कर एक। हालांकि जैसी घटनाएं हैं, इसे प्रेम कहना तो प्रेम का मजाक ही है। जाने किस दिशा में जा रहे हैं हम। सब लोग मोबाइल को कोसने में लगे हैं लेकिन कितने कमजोर हैं हम कि एक मोबाइल हमारे दिल और जहन पर हावी हुआ जा रहा है। मैं मोबाइल को बेगुनाह नहीं कहता लेकिन सच यह है कि कमजोरियां हमारे भीतर छिपी हुई हैं। हमें जाने किसकी तलाश है। रिश्तों में जाने क्या चाहते हैं हम। यह क्या प्यास है, कौनसी भूख है, कौनसी कुंठा है, जिसे मोबाइल नाम के इस छोटे से यंत्र ने जगा दिया है। केवल मोबाइल या रील्स के नाम पर ठीकरा फोड़कर क्या हम मुक्त हो सकते हैं।

–कुमार अजय,
उपनिदेशक,
सूचना एंव जनसंपर्क विभाग।

करेंसी प्रबंधन में लापरवाही : सिक्कों की लागत से लेकर भ्रष्टाचार तक का जाल

सुनील दत्त गोयल

भारत की आर्थिक व्यवस्था में नकदी और सिक्कों का महत्व किसी से छुपा नहीं है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि जिस संवेदनशीलता और दूरदर्शिता के साथ देश में मुद्रा प्रबंधन होना चाहिए, वह नदारद दिखाई देती है। हालात इतने गंभीर हो गए हैं कि आज सरकार और आरबीआई के अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाना ही नहीं, बल्कि कठोर कार्रवाई की आवश्यकता भी महसूस हो रही है।

आज से चालीस साल पहले जब एक पैसे और पाँच पैसे के सिक्के प्रचलन में थे, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि एक दिन बीस रुपये के सिक्के भी बाजार में उतारे जाएंगे। लेकिन इस सफर में सरकार ने कभी यह नहीं सोचा कि जिस सिक्के को वह जारी कर रही है, उसकी लागत सरकार को कितनी भारी पड़ रही है। उदाहरण के लिए, आज सिक्का बनाने में ही सरकार को उसकी मुद्रा से अधिक की लागत आती है। यानी, सरकार प्रत्येक सिक्के पर सीधा घाटा झेल रही है।

मैं आपको जयपुर स्थित भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) की शाखा, जो रामबाग सर्किल पर स्थित है, के बारे में एक कड़वा सच बताने जा रहा हूँ। यहाँ पर बैंक खुलने के दो घंटे पहले ही लोगों की लंबी लाइन लग जाती है। यह कोई सामान्य लाइन नहीं होती, बल्कि इनमें स्थायी (परमानेंट) लोग होते हैं जो सुबह से शाम तक वहीं मौजूद रहते हैं।

चाहे वह सिक्के लेने आए हों या नए नोटों की गड्डियां, इन कतारों में ज्यादातर लोग एक विशेष धर्म और संप्रदाय से जुड़े हुए होते हैं। दुखद बात यह है कि के गार्ड से लेकर नोट और सिक्के जारी करने वाले कर्मचारियों और अधिकारियों तक, सब इस गोरखधंधे में शामिल होने से इंकार नहीं किया जा सकता। इसका सीधा मतलब है कि ये लोग किसी और माफिया के लिए काम कर रहे हैं, और बदले में उन्हें कमीशन मिलता है।

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि सब कुछ जानते हुए भी वहाँ कोई उन्हें रोकने वाला नहीं है। यह देखकर बेहद अफसोस होता है कि आखिर सरकार की इंटेलिजेंस एजेंसियां और पुलिस अधिकारी इन सब से अनजान कैसे हो सकते हैं? सूत्रों के अनुसार, जब आरबीआई का स्टाफ नए नोट या सिक्के बैंकों को जारी करता है, तो पहले ही बैंक शाखा में अधिकारियों को फोन कर दिया जाता है कि "हमारा आदमी" आने वाला है। शाखा प्रबंधक मजबूरी में उस "आदमी" को नए नोटों की गड्डियां दे देते हैं क्योंकि वे आरबीआई के स्टाफ से टकराव नहीं कर सकते। इसका नतीजा यह है कि आम जनता तक 10 और 20 रुपये के नए सिक्के या नोट बहुत कम मात्रा में पहुंचते हैं, जबकि रिकॉर्ड में यह दिखाया जाता है कि भारी मात्रा में सिक्के और नोट जारी किए गए। असल में यह नोट और सिक्के ब्लैक मार्केट में बेचे जाते हैं।

10 और 20 के सिक्कों की असली कीमत उनकी अंकित कीमत से कहीं अधिक है। उदाहरण के लिए, 10 का सिक्का गलाने पर उसका मेटल 13 से 14 तक बिकता है। नतीजा यह है कि संगठित गिरोह इन सिक्कों को बड़ी मात्रा में इकट्ठा कर गलाते हैं और मेटल के रूप में बेचते हैं। यह गतिविधि खुलेआम हो रही है और सरकार तथा इंटेलिजेंस एजेंसियों को इसकी जानकारी होनी चाहिये। इसके बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हो रही, जो यह दर्शाता है कि कहीं न कहीं ये एजेंसियां भी इस गोरखधंधे का हिस्सा बन चुकी हैं या जानबूझकर आंख मूंदे हुए हैं।

प्रधानमंत्री से अपील : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दूरदर्शी नेता माना जाता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे इस गंभीर मुद्दे पर तत्काल संज्ञान लें। सरकार को चाहिए कि 20 तक के सिक्के और छोटे मूल्यवर्ग की करेंसी का निर्माण बंद करे। साथ ही, यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि किसी भी करेंसी की उत्पादन लागत उसकी अंकित मूल्य के 20 प्रतिशत से अधिक न हो। उदाहरण के लिए, यदि सरकार 20 का सिक्का बना रही है, तो उसकी लागत 4 से अधिक नहीं होनी चाहिए।

छोटे मूल्य के सिक्कों के लिए यह लागत और भी कम - लगभग 1.50 से 2 के बीच रहनी चाहिए। मेरा सरकार को सुझाव यह है कि वर्तमान में जितने भी सिक्के प्रचलन में हैं, उनका साइज़ वही रखा जाए, लेकिन उनका वज़न और उनमें उपयोग होने वाली धातु के मिश्रण व लागत कम की जाए। यह लागत इतनी कम होनी चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति उस सिक्के को गलाकर बेचना भी चाहे, तो उसे उसके मुद्रित मूल्य के आधे दाम से भी कम मिले। इससे न केवल सरकार का राजकोषीय घाटा कम होगा, बल्कि सिक्कों के निर्माण में लगने वाली लागत भी घटेगी। साथ ही, इस तरह की कालाबाजारी और अवैध धंधे जो आजकल चल रहे हैं, वे स्वत: ही बंद हो जाएंगे।

निष्कर्ष : करेंसी केवल लेन-देन का माध्यम नहीं, बल्कि देश की आर्थिक साख का प्रतीक है। जब सिक्कों की लागत ही उनकी अंकित कीमत से अधिक हो जाए और संस्थानों में भ्रष्टाचार घर कर ले, तो यह न केवल आर्थिक खतरा है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी मुद्दा बन जाता है। सरकार को चाहिए कि वह इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए तत्काल कार्रवाई करे। अन्यथा, आने वाले वर्षों में यह समस्या इतनी विकराल हो सकती है कि देश की अर्थव्यवस्था को भारी क्षित पहुंचेगी। देशवासी उम्मीद करते हैं कि केन्द्र सरकार इस मुद्दे को प्राथमिकता देंगे और मुद्रा प्रबंधन को सही दिशा में ले जाने के लिए कड़े कदम उठाएंगे।

रोटेरियन सुनील दत्त गोयल
महानिदेशक, इम्पीरियल
चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री

राशिफल रविवार 28 सितम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 3:55 तक, आयुष्मान योग रात्रि 12:32 तक, तैतिल करण दिन 2:28 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:55 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 3:55 तक् है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 3:55 से सूर्योदय तक है। आज छठ पूजन, तप षष्ठी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:51 से 9:20 तक्, लाभ-अमृत 9:20 से 12:18 तक, शुभ 1:47 से 3:16 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:22, सूर्यास्त 6:14

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-